Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

# निश्चलीकरण से आधुनिक अध्यापन पद्धती पर होन वाले प्रभावों का अध्ययन

**Raju Dhondiba Bandgar***

Researcher Student, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan

***सारांश –*** ***काला धन या गलत मार्गों से कमाए हुए धन को मूल स्वरूप से खत्म करना चाहिए। ऐसी अपेक्षा व्यक्त करके भी वह धन पुरी तरह से खतम नहीं हो रहा है। इसमें व्यवस्था समिती के गहरे संबंध यह एकमेव वजह है। पंतप्रधान जी का 500 से 1000 रूपयों की नोटों पर पाबंदी लगाने का फैसला उन हितसंबंधों के विरोध में उठाया गया एक महत्त्वपूर्ण कदम है।***

***अर्थव्यवस्था को पुनर्जिवित करना या रोख मुक्त करना यह भी नोटों पर पाबंदी लगाने के पिछे एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।***

---------------------------------x---------------------------------

निश्चलीकरण याने नोटों पर पाबंदी लगाने से कर ना भरनेवाले लोगोंसे कर हासिल करना आसान हुआ है। नोटों का व्यवहार करने से बहुत बार भ्रष्टाचार को बढ़ोती मिलती है। शासन के कर के माध्यम से जमा होने वाले पैसों पर इसका नतीजा दिखाई देता है। वैकल्पिक रूप से सामान्य लोगों का जीवन, उनका रहन-सहन बढ़ाने के लिए जरूरी आराम की सुविधाओं की निर्मिती करना कठिण हो रहा है। नोटों पर पाबंदी लगाने से महसूल में भी बढ़ोती हो सकती है। इस तरह समाज के लोगों की एक सोच है।

निश्चलीकरण याने नोटों पर पाबंदी लगाने से शैक्षिक क्षेत्रो के भी होश उड गए है। छात्रों की पाठशालाओं की एवं महाविद्यालयों की फी, परीक्षण फॉर्म फी, प्रश्नपत्र छपाई खर्चा, स्टेशनरी सामग्री खरेदी इन तरह की अन्य शैक्षिक चीजों के खर्चोंपर इनका प्रभाव दिखाई दे रहा है। इन प्रभावों की समीक्षा उपरोक्त अनुसंधान में दिखाई देती है।

## की वर्ड

1. नोटों पर पाबंदी
2. अध्यापन पद्धती

## पाश्र्वभूमी

नोटों पर पाबंदी लगाना यह भारत ने पहले बार किया नहीं है। इससे पहले दो बार नोटों पर पाबंदी लगाई है। सब से पहले 1946 याने स्वातंत्रता पूर्व 1000, 5000 और 10000 रूपयों की नोटों पर पाबंदी लगाकर उनको पूरी तरह से बंद किया था। विशेषता से यह तीनो नोट फिर से 11954 में व्यवहार में लाए गए थे। आगे चलकर 1977 में जनता पक्ष का शासन था। तब तत्कालीन प्रंतप्रधान मोरारजी देसाई इन्होंने नकली नोट और काला धन खोजने के लिए ‘दी हाय डीनोमीनेशन बँक्स नोट्स ॲक्ट’ को सहमती दी थी। इस कार्य के अंतर्गत 26 जानवरी 1978 को 1000, 5000 और 10000 रूपयों की नोटों पर दुसरी बार पाबंदी लगाई गई। उसके बाद अभीके पंतप्रधान नरेंद्र मोदी इनके निर्णय के मुताबिक यह निश्चलीकरण का फैसला भी आज तक के भारतीय इतिहास की तीसरी घटना है।

शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए अध्यापन पद्धतीओं का और उनके लिए आवश्यक शैक्षिक सामग्री का विकास हो रहा है। इसकी वजह से छात्रों की आकलन क्षमता बहुत ही अच्छी तरह से विकसित हो रही है। और शिक्षा के प्रति छात्रों के मन में रूची पैदा हो रही है। पाठशाला और महाविद्यालय अध्यापन में भी कृतिकेंद्रित अध्यापन पद्धती पर ज्यादा जोर दे रहे है। नए पाठयपुस्तक और उनके मुल्यांकन भी इस ही पद्धती पर आधारित है।

अध्यापन प्रभावशील होने के लिए पाठशाला और महाविद्यालयो में ज्यादा से ज्यादा संगणक का इस्तेमाल हो रहा है। पी. पी. टी., पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन इनके माध्यम से विषय ज्यादा से ज्यादा सरल बनाने के बारे में अध्यापक

www.ignited.in

ध्यान दे रहे है। ई-बुक, टॅब के द्वारा भी छात्र प्रणाली को अद्यावत किया जा रहा है। इंटरनेट के आधार पर प्राप्त हुए जानकारी से ज्ञान का मार्ग उनके लिए खुला किया है।

यह छात्रों के लिए हो रहे सकारात्मक बदलाव है। वह बदलाव स्वीकारार्ह है। लेकिन यह पूरी प्रणाली खर्चा बढ़ाने वाली है। कृतिकेंद्रित अध्यापन पद्धती से बनाए जाने वाले ‘कृति पत्रक’ के पन्नों की संख्या बढ़ने से कागज तो ज्यादा लग रहे है। लेकिन उसके साथ ही साथ छपाई के खर्चा भी बढ़ रहा है। इन्सानों की मेहनत ज्यादा लग रही है। उनके भी वेतन में बढ़ोती करनी पड़ रही है।

मुंबई विद्यापीठ में सादर किया हुआ डिजिटल कागज की जाँच करने का विकल्प अगर उचित लग रहा हो पर उसको वास्तविक रूप से लागू करने में बहुत सारी कठिनाईया आ रही है। प्रशिक्षण लिए हुए अध्यापकों की कमी महसूस हो रही है। आवश्यक सुविधाए, आवश्यक सामग्री, प्रणाली, तकनिक मानवी मेहनत और खर्चा इन सबका मेल होना भी जरूरी है। निश्चलीकरण के कालावधी में छोटी-छोटी चीजों के खर्चों पर भी पैसों के रूप में व्यवहार करने पर पाबंदी लगती है। लेकिन यह तो सही है कि, हात में पैसा ना लेकर भी अन्य मार्गोसे पैसों के व्यवहारों को सफलता हासिल हुई है।

भारत में केजी टू पीजी ऐसे सभी प्रकार के प्रवेशों के लिए कॅपीटेशन फी याने अतिरिक्त शुल्क पैसे के रूप में स्वीकार किए जाते है। निश्चलीकरण से व्यवस्थापन कोटे के नाम पर पदवी, पदव्युत्तर, अभियांत्रिकी और मेडीकल महाविद्यालयों के अतिरिक्त शुल्क के नामपर हो रही लूट को रोकने के लिए शत प्रतिशत सफलता मिलने की संभावना है। शिक्षा के संस्था चालकों को मिली हुई यह बडी थप्पड है। आज एम.बी.बी.सी के लिए 40 से 60 लाख तक एम. डी. या एम. एस. डॉक्टर होने के लिए 1.5 से 2 करोड तक रूपयों का अतिरिक्त शुल्क छात्रों से प्राप्त किया जाता है। और अभियांत्रिकी पदों पर या पदो के लिए 2 लाख से 20 लाख तक यह व्यवहार किया जाता है। लेकिन कॅशलेस व्यवहार और निश्चलीकरण से इन प्रकार के लुटेरों पर अंकूश लगा सकते है।

निश्चलीकरण से आनेवाले समस्याओं का सामना ऐसे विभिन्न स्तरों पर शिक्षा क्षेत्र को भी करना पड़ रहा है। लेकिन कॅशलेस अर्थव्यवस्था की निर्मिती हो जाए तो इनमें से बहुत सारे अवांछनिय रूढीओं पर पाबंदी लगाना आसान हो जाएगा। इस नजरिए से सोचते समय ‘निश्चलीकरण’ यह एक महत्त्वपूर्ण कदम माना जाता है।

## उद्देश्य

1) नोटों पर पाबंदी लगाने से आधुनिक शिक्षा के पद्धती पर जो प्रभाव हुआ है, उसका अध्ययन करना।

2) अध्यापकों के प्रत्यक्ष अध्यापन पर नोटों पर पाबंदी लगाने से जो प्रभाव हुआ है, उसका अध्ययन करना।

3) अध्यापन करते समय इस्तेमाल किए जानेवाले नए अध्यापन पद्धती पर नोटों पर पाबंदी लगाने से जो प्रभाव हुआ है, उसका अध्ययन करना।

## गृहितक

1) नोटों पर पाबंदी लगाने से आधुनिक शिक्षा पद्धती पर कुछ प्रभाव दिख नहीं रहा है।

2) नोटों पर पाबंदी और शिक्षा इनका निकटनीय संबंध दिखाई दे रहा है।

3) अध्यापक के अध्यापन पर नोटों पर पाबंदी लगाने से कुछ खास प्रभाव नहीं हो रहा है।

4) अध्यापन करते समय इस्तेमाल किए जाने वाली अध्यापन पद्धती पर नोटों पर पाबंदी लगाने से प्रभाव दिख रहा है।

5) नोटों पर पाबंदी की वजह से शिक्षा का दर्जा बढ़ गया है।

## कार्यात्मक शब्दों की परिभाषा

1) निश्चलीकरण - पुराने चलन को हटाकर या उसे पुरी तरह से बंद करके उसके जगह पर नए चलन व्यवहार में लाना इसे ‘निश्चलीकरण’ कहते है।

2) अध्यापन पद्धती - छात्रों को अध्यापन करते समय इस्तेमाल किए जाने वाले नए-नए तरीकों को या युक्तिओं को ‘अध्यापन पद्धती’ कहते है।

## अनुसंधान कार्यपद्धती

प्रस्तुत अनुसंधान की समस्या चालू स्थितीपर आधारित होने के कारण शोधकर्ता ने निश्चलीकरण का शिक्षा के क्षेत्र पर जो प्रभाव हुआ है, उसके बारे में अध्ययन एक प्रश्नावली बनाई

www.ignited.in

है। उसमें कुछ सवाल बंदिस्त थे और कुछ सवाल मुक्त थे। कुल मिलाकर सवालों की संख्या 20 थी। इस प्रश्नावली के जवाब 40 अध्यापकों द्वारा प्राप्त किए है। प्राप्त किए हुए प्रश्नावली के माध्यम से जो जानकारी मिली है। उसका अर्थविश्लेषण करके अन्वयार्थ निकाला है। और अन्वयार्थ के मद्द से निष्कर्ष निकाला है।

## निष्कर्ष

1) शैक्षिक संस्थाओं की मनमानी कार्यों पर नियंत्रण प्रस्थापित हुआ है। शैक्षिक संस्था चलाने वालों को भी बहुत जोर गहरा थप्पड मिला है।

2) माता-पिता और छात्रों की ज्यादा शुल्क के नाम पर होने वाली लुटमार रोकने में मद्द मिली है।

3) नोटों पर पाबंदी लगाने से शिक्षा का दर्जा बढ़ने में बहुत मद्द मिलने वाली है।

4) अध्यापक अपनी पाठशाला को विकसित करने के लिए गुणवत्ता से पूर्ण कार्यक्रमों की बनाने लगे है।

5) छात्रो में सर्जनशीलता को विकसित करने के नए-नए अध्यापन प्रणाली, पद्धती, प्रतिमानों का इस्तेमाल अध्यापक कर रहे है।

6) आज के प्रणाली विज्ञान के विश्व में सभी अध्यापक व्हर्चूअल क्लासरूम, ई-लर्नींग इनका इस्तेमाल करते है। जिस की वजह से पाठशाला के सभी छात्रों की संपादन क्षमता बढ़ी हुई दिखाई देगी। उसमें से ही पाठशाला का दर्जा विकसित होगा। और पाठशाला में नए-नए छात्र अपने आप आने लग जाएंगें।

7) अध्यापकों ने नए अध्यापन पद्धती का इस्तेमाल करने से लगने वाला अवधि, श्रम और पैसा ज्यादा प्रतिशत नहीं लगता है।

8) महाराष्ट्र पाठयपुस्तक निर्मिती मंडलों के कृतिकेंद्रित अध्यापन पद्धती का स्वीकार करके पाठयपुस्तकों की निर्मिती करने से छपाई, पन्नों की संख्या और उनको बनाने के लिए आनेवाले खर्चे में बढ़ोती हो रही है।

9) मूल्यांकन के लिए कृति पत्रक का इस्तेमाल किया जा रहा है। इस वजह से कृति पत्रक की लंबाई बढ़ रही है। उसके कारण खर्चा ज्यादा हो रही है।

## सिफारिशे

1) नोटों पर पाबंदी लगाने से शालेय शिक्षा पर प्रभाव होना नहीं चाहिए।

2) अध्यापको ने अपना अध्यापन कार्य यह लगनता से करना चाहिए।

3) अध्यापको ने अपने अध्यापन में नए-नए प्रणालीओं का और पद्धतीओं का इस्तेमाल करना चाहिए। उसके लिए स्वयं निर्मित प्रणाली और सामग्री निर्माण करनी चाहिए।

4) संस्थाचालकों को छात्रों के गुनों के देखकर उनका चयन करना चाहिए। उनसे जरूरत से ज्यादा पैसे नही लेने चाहिए।

## प्रस्तुत शोध का परिणाम

धन ही सब कुछ नहीं है, यह सभी अध्यापकों के ध्यान में आएगा। उसकी वजह से नए-नए अध्यापन पद्धती को विकसित और उनकी निर्मिती करने के लिए उनका सहयोग मिलेगा। उसमें से ही सही मतलब से छात्रों की सर्जनशीलता को बढ़ोती मिलेगी। प्रभावरूप से पाठशाला की गुणवत्ता भी बढ़ेगी। और ज्ञानरचनावाद उचित रूप से कामयाब होगा।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1) www.wikipedia.com.

2) Kaul Lokesh – Methodology of Educational Research, Vani Educational Books, New Delhi.

3) भितांडे वि. रा. 2006: शैक्षिक अनुसंधान पद्धती, पुणे, नित्यनुतन प्रकाशन.

4) मुहे रा. शं. और उमाठे वि. तु. 1987: शैक्षिक अनुसंधान की मूलतत्वे, नागपूर, महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडल.

5) दैनिक लोकसत्ता, November - December 2016.

**Corresponding Author**

**Raju Dhondiba Bandgar***

Researcher Student, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan